चमन का

श्री सर्वग्रह शनि सतोत्र

लेखक :
ब्रह्मर्षि श्री चमन लाल जी भारद्वाज "चमन"

जरूरी सूचना

आप सभी जानते ही हैं कि चमन लाल भारद्वाज 'चमन' जी की सभी रचित पुस्तकें उनके सुपुत्र श्री बृज मोहन भारद्वाज पुस्तकाल्य द्वारा ही प्रकाशित की जाती हैं और सर्वाधिकार उन्हीं के अधीन हैं।

टाईटल पर श्री चमन लाल भारद्वाज 'चमन' जी की तस्वीर के बिना पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाती। इस लिए आप भी उनकी पुस्तक लेते समय इस बात का ध्यान रखें।

101 किताबें शनि मन्दिर में चढ़ाने से आपकी सब मुश्किलें भगवान शनि देव की कृपा से दूर होंगी।

'उमेश भारद्वाज'

स्तोत्र की महानता

वर्तमान युग में हर जीव किसी न किसी दुःख संकट में ग्रस्त होकर सुख की प्राप्ति के लिए जगह जगह भटकते रहते हैं। दुःख के लिए किसी न किसी नवग्रह की करोपी मान लेते हैं। दुःख निवारण के लिए अनेक उपाय करते हैं लेकिन सुख की प्राप्ति भाग्य के बिना नहीं होती। इस स्तोत्र में 'चमन' जी ने हम जीवों के लिए जो किसी न किसी कर्ज एवं आर्थिक संकट में पड़े हों इन स्तोत्रों से नवग्रहों को प्रसन्न करने का मार्ग बताया है। इस से सुख की प्राप्ति होती है।

अपने इष्टदेव की सुन्दर मूर्ति के सामने पवित्र जल, घी की जोत या सुगन्धित धूप जला कर जिस ग्रह की दशा हो उस स्तोत्र का पाठ कर लें और चरणामृत पी लें, तथा बदन पर छिड़क लें। सब आशायें पूरी होंगी।

'बृज भारद्वाज'

जरूरी सूचना

जिस ग्रह की दशा हो उसकी उपासना (जाप) करने की विधि के लिए 50-50 रुपए का मनी आर्डर द्वारा 'चमन' सर्वग्रह उपासना पूजा विधि मंगवायें जिससे ग्रह दशा टल जायेगी तथा लाभ होगा।

सूर्य दशा निवारण स्तोत्र

सूर्य दशा 6 वर्ष

जय सूर्य देव जय भास्कर।
जय रवि कृपाल जय करुणा कर।
दया के सागर जग उजियाले।
जय अनन्त प्रभो जग रखवाले।
अगन तेज के रक्षक हो तुम।
सब पापों के भक्षक हो तुम।
महां तेज बलशाली भानू।
दिवाकर कृपालू अनन्त प्रमानू।
देवों के ईश्वर पवित्र महां हो।
अति सूक्ष्म और अनुपम प्रभा हो।

दिवाकर जगत के हो उद्धार कर्ता।
है प्रचण्ड रूप सदा विश्व भर्ता।
जल रूप रस को ग्रहण करने वाले।
हो तपता सनातन धर्म धरने वाले।
मैं प्रणाम करता हूं दयालु स्वामी।
दशा से बचा लो मुझे अर्न्तयामी।
तेरा तेज हर जीव मैं है समाया।
तेरे तेज से ही बनी महां माया।
जभी था माता ने तुझ को पुकारा।
तो ये वचन देकर जन्म था संवारा।
हजारवां अंश मेरा अन्ड होगा।
तभी नाम उसका मार्तण्ड होगा।

जो देवों की खातिर मारू दैत्य सारे।
ऐ माता करूं काम पूरे तुम्हारे।
मेरी जन्म गाथा को गगायेगा जो भी।
हर इक कामना उसकी झट पूरी होगी।
जो प्रातः उठे दर्शन मेरे करेगा।
मेरा तेज उसके भण्डारे भरेगा।
प्रभु सूर्य प्रणाम स्वीकार कीजो।
दशा से बचाओ उपकार कीजो।
मेरे नेत्रों में भरो अपनी शक्ति।
मेरे मन के मन्दिर में उपजाओ भक्ति।
तेरा नूर हर आँख में है समाया।
तेरे नूर से जगत है जगमगाया।

दया हो तुम्हारी तो शत्रु है डरता।
कृपा से तेरी जीव है आगे बढ़ता।
तुम्हारी नज़र जिसपे हो भाग्यशाली।
वोह दानी कर्ण है भण्डारों का वाली।
करो दास पर भी नज़र इक कर्म की।
ये खुल जाए ग्रन्थी गरीबी भरम की।
मेरी आशा को पूरी हर बार करना।
चमन का नमस्कार स्वीकार करना।
हो दासों को तुम शरण देने वाले।
सभी कष्ट दुःखों को हर लेने वाले।
दयालु दया कर कृपालु कृपा कर।
मुझे सुख दो भगवान भण्डारे यह भरकर।

मेरा तेज नितदिन बढ़ाते ही रहना।
मुझे मुश्किलों से बचाते ही रहना।
दया अपनी से मेरी बिगड़ी बना दो।
मेरी सारी चिन्ताओं को तुम हटा दो।
'चमन' का नमस्कार स्वीकार करना।
प्रभु तेज मय मेरे भण्डारे भरना।

भगवान सूर्य जी की महिमा

एक बार मुनियों ने पूछा ब्रह्मा जी से हाल।
किस की पूजा करने से जीव हो मालामाल।
मिले पुण्य और बिगड़े भाग्य भी बन जायें।
भक्ति शक्ति धन से वह खुशहाल हो जायें।
तो ब्रह्मा जी बोले सब से निराला।
प्रभु भास्कर लाखों ही किरणों वाला।
विकर्तन, विसर्जन, वोह मार्तण्ड है।
वोह भास्कर रवि रमेश्वर प्रचन्ड है।
लोक चक्षु लोसाक्षी तापन तपन है।
शुचि कर्ता धर्ता जनार्धन वचन है।
करोड़ों ही नाम उसके शुभ धाम है।
उस भगवान सूर्य को प्रणाम है।

करें सूर्य दर्शन ये स्तोत्र गायें।
नमो भास्कर कह के जल भी चढ़ायें।
करे फिर परिक्रमा उसी जल को लेकर।
जमीं से उठायें 'चमन' तिलक लेकर।
रहें न रोग कोई फिर उसके तन में।
जपे सूर्य नाम हरदम जो मन में।
नमो भास्कर कहके सर को झुकायें।
प्रभु मारतण्ड से जो माँगे सो पायें।
कोई पाप फिर उसको छूने न पाये।
प्रभु सूर्य की कृपा जिस पर हो जाये।
'चमन' ये स्तोत्र है सब से निराला।
सर्व सिद्धि पायें इसे पढ़ने वाला।

''चमन''

भगवान सूर्य जी की स्तुति

करो कृपा मुझ पे भी ऐ सूर्य देव।
करूँ वन्दना तेरी देवों के देव।
तेरा नाम जपने से है तेज बढ़ता।
दुःखों से वह हरगिज नहीं जीव डरता।
गरीबी कभी पास उसके न आये।
जपे नाम दुःखों से छुटकारा पाये।
तेरे नाम से धन व दौलत है बढ़ती।
निराशा में तेरी ही है ज्योति जलती।
हो जिस पे दया तेरी भण्डार भर दे।
तेरी दृष्टि मिट्टी को भी सोना कर दे।

ये निर्बल भी बलवान होता तभी है।
तेरी नज़र जिस पर होती जभी है।
तू चाहे तो पल में खुशहाल कर दे।
दशा जो बिगड़े तो बदहाल कर दे।
हज़ारों ही नामों में रवि नाम तेरा।
तुम्हें सूर्य देवता है प्रणाम मेरा।
तेरा नाम लेने से कल्याण ही हो।
करे वन्दना तेरी प्रातः उठे जो।
अंधेरे में उजयाला हो करने वाले।
हर इक के भंडार हो भरने वाले।
तू दानी है हम तो हैं भिक्षुक तुम्हारे।
करो कृपा अपनी बनो तुम सहारे।

तेरी किरणों से यह जीवन भी खिलता।
तेरे नाम से भूखों को अन्न मिलता।
तेरा नाम लेने से टलती बलाऐं।
जो निसदिन तेरा ही यें स्तोत्र गाये।
तू सब से बड़ा दाता है सूर्य दानी।
हरो मेरी चिन्ता नमामी नमामी।
मेरे मन में भी अपना प्रकाश कर दो।
है बृज की विनय दाता भण्डार भर दो।

चन्द्र विनय स्तोत्र

चन्द्रमा दशा 10 वर्ष

सुधा मूर्ति चन्द्र सुख दाता,
करो कृपा मेरे भाग्य विधाता।
सागर के पुत्र तुम हो हितकारी।
अमृत रस के हो गुणकारी।
तेरी शक्ति है सब में समाई।
तेरी किरणों में है प्रभुताई।
विष और अमृत तुम्हारे भ्राता।
करे सम्मान लक्ष्मी सुख दाता।
अमावस पूर्णिमा हो घटते बढ़ते।
जड़ चेतन में भी हो रस भरते।

कृपा करो ऐ कृपा के सागर।
मेरा जीवन भी यह कर दो उजागर।
राज दरबार में मान दिलाना।
सभी चिन्तायें यह मेरी हटाना।
दया करो लक्ष्मी के भ्राता।
चौथा लग्न भण्डारे भर जाता।

शशी इन्दू निशाकर प्यारे।
आये शर्ण हैं हम तुम्हारे।
जिस पर दया कर देते हो।
उसके भण्डारे भर देते हो।
चन्द्र मुकुट शिव जटा सुहाए।
चन्द्र केतु तब नाम कहायें।

दया करो मुझ दीन पर, भरो मेरे भण्डार।
'चमन' निराश जाऊँ न आकर तेरे द्वार।।

मंगल दशा निवारण स्तोत्र

मंगल दशा 7 वर्ष

जय मंगल मंगल के दाता।
मिटें अमंगल न रहे उत्पाता।
जिसके जन्म लग्न में आवें।
मंगलीक वह जीव कहावे।
फिर भी पूजा करे जो तेरी।
लेते अपनी दशा हो फेरी।
जिस पर कृपा कर देते हो।
सभी भण्डारे भर देते हो।
तेरा जो स्तोत्र गावे।
उसकी किस्मत रंग दिखावे।

जिस से नजर फिरा लेते हो।
उसके भाग चुरा लेते हो।
व्रत जो तेरा करे नर नारी।
तेरी दया से रहे सुखारी।
कष्ट रोग से हो छुटकारा।
जिसने प्यार से तुम्हें पुकारा।
बजरंगी का सुमिरण करके।
जगदम्बे का ध्यान ही धरके।
'चमन' की दुर्गा स्तुति लेकर।
पढ़े साथ में श्रद्धा देकर।
बजरंगी का नाम चितारे।
मंगल की वह दशा निवारे।
मंगल काली को सीस निवावे।
भोग लगा परशादी पावे।

'चमन' का संकट मोचन लेकर।
श्रद्धा से पढ़े मन लगा कर।
तीन माला इस मंत्र की कर।
साथ में संकट मोचन को पढ़।
मंगल दशा क्रूर न होगी।
खुशी कोई भी दूर न होगी।
'चमन' को है आशीर्वाद यह।
करें प्रेम से नाम याद यह।
स्तोत्र से खुश हो मंगला।
जीव कोई भी रहे न कंगला।
मूंगा सुन्दर गले में डाले।
तांबा चांदी में मढ़वाले।
या इस धातु की मुन्दरी बनाकर।
पहिने दाहिने हाथ में सुन्दर।

सुर्ख चन्दन लेकर कस्तूरी।
तिलक करे हो आशा पूरी।
मुन्दरी को ही तिलक लगावे।
मुन्दरी को ही धूप दिखावे।
पढ़े प्रेम से यह स्तोत्र।
सुख पावें सब इसको पढ़ कर।
जय मंगल मंगल के दाता।
जो जन हरदम तुम्हें ध्याता।
कभी अमंगल हो न उसको।
कभी भी घाटा रहे न उसको।
उसका तेज बढ़ा देते हो।
जिस पर दया दिखा देते हो।
मंगल के दिन लाल रंग जो।
माथे तिलक लगायें अंग जो।

उसका तुम ही तेज बढ़ाना।
मंगल अपनी दया दिखाना।
जय बजरंगी जय जगदम्बे।
जय वरदाती जय जय अम्बे।
जय श्री राम राम असुरारी।
यह है पूजा असल तुम्हारी।
तुम्हारी पूजा तुम्हारी सेवा।
मुझ से हो न सकती देवा।
ये अरदास मेरी स्वीकारो।
अपनी दशा को आप निवारो।
सुख सम्पत्ति भरपूर करो जी।
'चमन' के संकट दूर करो जी।
जय मंगल जय सुखदाई।
जय बजरंगी जय महा माई।

श्री राहू केतु दशा निवारण स्तोत्र

राहु-दशा 18 वर्ष

जय राहु जय जय केतु,
आपकी नवग्रह में गिनती आई।
अमृत के प्रभाव से इक धड़,
एक हुआ है सिर भाई।
शनि देव की संगत से,
हर दशा क्रूर हो जाती है।
इक दूजे के सातवें घर में,
जगह तुम्हें मिल जाती है।
रहता मन उचाट है उसका,
जिस पे दशा तुम्हारी हो।

सूर्य चांद की दृष्टि साथ हो,
रहता सदा दुःखारी वोह।
काले वस्त्र काले तिल और,
तेल की पूरी बनवा कर।
लोहा पुष्प भी काले रंग,
अक्क समीप धरे जाकर।
अक्क के पत्ते पर फिर काली,
स्याही से लिख ले जै राहु।
जय राहु जय जय केतु करें।
पूजा अक्क की डर न हो।
राहु केतु आये नमः कह कर,
जो तेल सरसों छिड़के।

तेल की पूरी तेल कचौरी,
तेल डोनों में रखें भर कर।
अक्क जड़ में वास है आपका,
राहु केतु बलकारी।
दया की दृष्टि करो प्रभु जी,
हर लो अब विपता सारी।
कर्म लेख जो उल्टें हो तुम,
उन को सुखदायक कर दो।
देव से देव बने हों तो,
अपनी दया से भण्डारे भर दो।
मैं नव ग्रह की पूजा करके,
तुम्हें भी सीस झुकाता हूँ।

पूजा की सब सामग्री भी,
श्रद्धा सहित चढ़ाता हूं।
श्री राहु केतु देवो सब,
मुझ पर भी उपकार करो।
दुख के बदले सुख दो,
अपनी दशा हटाकर दया करो।
नम्र भाव से जो भी पूजे,
उन पर न आफत आवे।
तेरा जो स्तोत्र पढ़े वह,
ग्रह दृष्टि से बच जावे।
मन ठिकाने रहे कार्य से,
लाभ हो धन व्यापार में भी।

मान बड़े और शान बड़े,
रुतबा बढ़े सरकार में भी।
दया करो जो पूजे राहु,
केतु का उपाय करे।
जो पड़े स्तोत्र 'चमन' तुम्हारा,
वर दो किसी ग्रह से न डरे।
ये सूर्य चन्द्रमा बुध बृहस्पति,
जो अपनी दशा न हरते हैं।
जो श्रद्धा से पूजें इन्हें,
उसके सब काम संवरते हैं।
तुम भी क्रूर अपनी दृष्टि को,
दया भाव में बदलाओ।

जो विनय प्रेम से 'चमन' करे,
उसको तो सुख तुम पहुँचाओ।
हो बलशाली राहु केतु,
प्रणाम 'चमन' का स्वीकार करो।
तुम अपनी दया दृष्टि से,
प्रभु मेरे सारे कष्ट हरो।
बिमारी दुख और रँजो फिकर,
न अब नज़दीक मेरे आयें।
तुम अपनी दशा निवारो प्रभु,
सब संकट मेरे कट जायें।
रहे मेरा स्वस्थ शरीर सदा,
शुभ कर्मों का ही ध्यान रहे।

मेरे घर में सुख सम्पत्ति दो,
न चिन्ता का नामो निशान रहे।
मेरी आन बढ़े मेरी शान बढ़े,
सुख के सारे सामान बढ़ें।
हर आशा हो मेरी पूरी,
सब काम मेरा प्रवान चढ़े।
'चमन' कोई चिन्ता न रहे,
रहें हरदम ही भण्डार भरे।
मैं सब से आदर पाता रहूँ।
हर जीव ही मुझ से प्यार करे।
कर सके जीव तो इस मंत्र की,
माला दो नित कर ले।

न कर सके तो यह मंत्र ही,
श्रद्धा प्रेम से ही पढ़ ले।

ओम भाम भीम स्वाहा
राहुयै नमः केतके नमः

(इस मंत्र से दो माला हवन
कर लें, तिल चावल, गुड़
मिला हवन शनिवार को करें)

प्रकाशक : बृजमोहन भारद्वाज पुस्तकाल्य

बृहस्पति

बृहस्पति-दशा 16 वर्ष

सदा मन से तुझको ध्याता रहूं मैं,
तेरे चरणों में सीस झुकाता रहूं मैं,
कृपा मुझ पे करना कृपा के सागर,
तेरी दृष्टि से जीव होता उजागर।

तेरा नाम बृहस्पति है सुखदाई,
गुरू पदवी देवों से तुमने है पाई।
देव गुरू कहलाने वाले,
अच्छी शिक्षा दिलाने वाले।
वन्दना तेरी जो करता हो,
उसके कष्ट हर लेते हो।

धन से भरो भण्डारे मेरे,
आया प्रभु मैं द्वारे तेरे।
कृपा तेरी जिस पर हो जाये,
कभी न वो निर्धन कहलाये।
मुझ पर अपनी दया दिखाना,
दुख बिमारी से मुझे बचाना।
नित जो तेरी स्तुति गाये,
व्यापार में वह वृद्धि पाये।
सदा देव तुम बनो सहाई,
विपदा हरो मेरे सर आई।
तेरी स्तुति करने से सुख सम्पत्ति घर आये।
चमन दुखी रहें न वो नाम जो तेरा गाये।
सुखी रहे धन पा के वह ले जो तेरा नाम।
मिट्टी सोना बन जायें पूर्ण हो सब काम।

शनि दशा निवारण स्तोत्र

शनि-दशा 19 वर्ष

आद गणेश मनाय के,
शारदा माता ध्याय।
बम बोले के वाक्य मात मै,
सुन्दर लिखुं बनाय।
शनि देव सब ग्रहों में,
शक्ति शाली जान।
देती हैं जिस की दशा,
सब को कष्ट महान।
उन की दशा से बचने का,

लिखने लगा उपाय।
दुःख के बदले सुख मिलें,
शनि जो करे सहाय।
पदम पुराण की गाथा को,
सच्चा है प्रमाण।
शनि देव रक्षा करे,
करे जो उसका ध्यान।
स्तोत्र शनि देव का,
पढ़े जो शनिश्चर वार।
दशा न व्यापेगी कभी,
पावें सुख संसार।

'श्री भोले भण्डारी कैलाश पर।
समाधि में बैठे थे हो बे खबर।
हरि नाम नारद जी गाते हुए।
वहां आए बीना बजाते हुए।
झुका सीस स्तुति प्रभु की करी।
तो जागे समाधि से शिव लहरी।
बड़े प्यार से ऋषिवर को बिठाया।
तो नारद जी ने हाल अपना सुनाया।
मैं सारा ही ब्रह्मण्ड फिर आया हूं।
नया देख कौतक मैं घबराया हूं।
जिधर देखता हूं दुःखी लोग हैं।
सभी भोग उनके बने रोग हैं।

स्वर्ण पास है पर नहीं काम आता।
शनि की दशा से लोहा बनता जाता।
गृहस्थी के घर में रहे नित लड़ाई।
कि जिस पे दृष्टि शनि जी की आई।
जिस्म पर निगाह हो तो बिमार करदे।
यह चलने व फिरने से बेजार करदे।
उमर को जो देखें तो प्राणों को छीने।
यही बनके होनी खजाने को छीने।
तकें सातवें घर तो मरती लुगाई।
जो बच्चों को देखें तो कर दे तबाही।
व्यापारी को देखें तो नादार कर दें।
यह इक-२ कौड़ी को लाचार कर दें।

शनि ने जहां दृष्टि अपनी है डाली।
भण्डारे भरें पल में कर देवें खाली।
यह राजा को देखें तो कंगाल कर दे।
अमीरों वजीरों को बदहाल कर दे।
पक्की खेतियों पर दृष्टि जो डालें।
किसानों के पल में निकाले दीवाले।
यह दुनिया मरे काल से कष्ट पाके।
जो देखे प्रजा को नजर इक उठाके।
दशा इसकी तकदीर बनती बिगाड़े।
भरा घर गृहस्थी का पल में उजाड़े।
सभी इस से डरतें हैं घबरा रहे हैं।
सभी रोते चिल्लाते दुःख पा रहे हैं।

यह करजा बिमारी मुसीबत लड़ाई।
शनि की दशा में भरी है तबाही।
महादेव शम्भु दया कुछ दिखाईये।
उपाय कोई सोच कर तो बताईये।
शनि की दशा से बचें कैसे प्राणी।
करें काम क्या जिससे होवें न हानि।
सुन नारद की प्रार्थना बम भोला हर्षाय।
शनि दशा से बचने का कहने लगे उपाय।
सुनिए ऐ ऋषिराज जी शनि है ग्रह बलवान।
काल रूप मस्तक जटा दुःखों का मेहमान।
रघुवंश में हुए हैं दशरथ इक नर पाल।
इक दिन राजा से कहा ज्योतिषियों ने हाल।

शनि रोहिनी भेद कर आगे बढ़ना चाहें।
असुरों और देवों के सर कष्ट भयानक आयें।
दुनिया में पड़ जाएगा ऐ राजन महाकाल।
दुःख से पीड़ित रहेगी प्रजा ये बारह साल।
चक्रवर्ती राजा आप ही करिए कोई उपाय।
शनि देव की दृष्टि से यह सृष्टि बच जाये।
दशरथ रघुवंश यह सुन कर हुए बेचैन।
धनुष उठा लिया हाथों में भरे क्रोध से नैन।
अस्त्र शस्त्र साथ ले रथ पर हुए सवार।
सवा लाख योजन गये सूर्य मण्डल पार।
नक्षत्र मण्डल में जब पहुंचे धनुष उठायें।
दिव्य अस्त्र को देख कर गए सभी घबराए।

शनिदेव भयभीत हो बोले मन मुस्काय।
राजेन्द्र तेरा हुआ पूरा सभी उपाय।
देव असुर योगी मुनि ऋद्धि सिद्धि नरनार।
मेरी दृष्टि से सभी होवें जल कर छार।
तेरे उद्यम तेज और बल से खुशी मनाये।
दूंगा मैं वरदान वो जो तू मांगना चाहे।
राजा बोले यदि हैं मुझ पर आप दयाल।
ये ही मुझे वर दीजिए पड़े कभी न काल।
रोहिनी भेद करके आप, कभी न आगे जाओ।
पढ़े जो स्तोत्र तेरा उसे न कष्ट पहुंचाओ।
ऐसा ही होगा कहा शनि देव बलवान।
सुनने लगे स्तोत्र को करके नीचा ध्यान।

शनि स्तोत्र प्रारम्भ

तभी राजा दशरथ ने मस्तक झुकाया।
बड़े प्रेम श्रद्धा से स्तोत्र गाया।
विनय हूं मैं कर जोड़ सौ बार करता।
शनि देवता को मैं नमस्कार करता।
कृष्ण वर्ण और नील शम्भु समाना।
करे उल्ट और पुल्ट पल में जमाना।
तेरा रूप भयानक हैं मस्तक जटाएं।
अग्न जैसी आंखें हैं नीची निगाहें।
महांकाल सम है यह आकार तेरा।
शनि देव को है नमस्कार मेरा।

दबा पीठ में पेट तेरा भयंकर।
तेरी दृष्टि से हीरे हो जाते कंकर।
है दाढ़ें भी लम्बी व दांत नुकीले।
सभी रोम मोटे खुश्क चमकीले।
है फैला हुआ जिस्म साकार तेरा।
शनि देव को है नमस्कार मेरा।
तेरी चाल धीमी में जादू भरा है।
तेरी दृष्टि में काल सब का धरा है।
बली मुख हो हर चीज़ को खा जाने वाले।
हो काली घटा बन के छा जाने वाले।
भसम देह को तप करके तुमने किया है।
सदा योग में रहके बल यह लिया है।

गृहस्थी को हर वार तलवार तेरा।
शनि देव को है नमस्कार मेरा।
कशप पुत्र सूर्य के नन्दन हो स्वामी।
हर इक जीवन के दुःख के बन्धन हो स्वामी।
जो होते हो खुश तो तख्त ताज देते।
जरा रूठने से सभी छीन लेते।
भस्म करने की शक्ति तेरी निगाह में।
सर्वनाश है तेरी इक ही दशा में।
यह दुःख और दरिद्र है परिवार तेरा।
शनि देव को है नमस्कार मेरा।
दशा आने से पहले बेचैनी आये।
समय सम्पत्ति सुख दुःख सभी को मिटाये।

दशा हटती हटती भी पामाल कर दे।
हर इक को निगाह तेरी कंगाल कर दे।
मगर फिर भी दिल में दया जब भरे तू।
मुसीबत टले नज़र नीची करे तू।
तेरी तिरछी चितवन है बेआस करती।
और सीधी नज़र है सर्वनाश करती।
निगाह नीची बनती दर्द की दवा है।
करो बन्द आंखें तो होता भला है।
छुपा है इसी में सभी प्यार तेरा।
शनि देव को है नमस्कार मेरा।
'चमन' जो दशा आई मन घबराया।
किया ध्यान तेरा स्तोत्र बनाया।

शनिवार को पढ़ के है अजमाया।
बिगड़ता हुआ काम झट रास आया।
हुआ दूर दुःखों का यकदम अन्धेरा।
शनिदेव को है नमस्कार मेरा।
शनिदेव सुन स्तुति मन्द मन्द मुस्काए।
दोनों आंखें मूंदकर दीना वर हर्षाय।
जो प्राणी स्त्तोत्र यह पढ़े या सुने सुनाय।
दशा न व्यापेगी मेरी सुख सम्पत्ति वह पाए।
आयु आठवें चौथे या जन्म लगन में आये।
मृत्यु देता हूं सदा यह है मेरा न्याय।
और घरों में करता हूं मिल औरों से काम।
फिर भी दबते रहते हैं मुझसे ग्रह तमाम।

खुश होकर स्तोत्र से देता हूं वरदान।
इसी उपाय से करूं मैं सब का कल्याण।
इकमन हो के पवित्र जो मेरी शरण में आए।
प्रतिमा सुन्दर लोहे की ले काली बनवाए।
शमी पत्र और तेल से पूजे श्रद्धा धार।
उड़द भात तिल लोहे से करे मेरा सत्कार।
काली धेनू दान में देवें मेरे नाम।
स्तोत्र पढ़े प्रेम से करे मुझे प्रणाम।
मुझ को राजी करने का यत्न यही आसान।
शनिवार स्तोत्र पढ़ करें प्रेम से ध्यान।
प्रतिज्ञा मेरी अटल सुन राजन धर ध्यान।
स्तोत्र का पाठ सुन करूं नहीं नुक्सान।

दूसरे दुष्ट ग्रहों से भी मैं जान बचाऊं।
स्तोत्र पढ़ने से मैं बिगड़ी चमन बनाऊं।
छः शनीचरवार जो पूरी तेल बनाएं।
मेरे नाम पर कौओं और कुत्तों को खिलाये।
तिल और उरद का भात भी,
अक्क समीप ले जाए।
संग में तेल की पूरी को शनिवार धर आऐ।
सूर्य सन्मुख बैठ कर स्तोत्र पढ़े जाए।
उसको किसी प्रकार का कभी कष्ट न आए।
पा कर इस वरदान को दशरथ हुए रवान।
मात लोक राजधानी में पहुंचे जल्दी आन।
शहर ढंडोरा दे दिया जो चाहे कल्याण।

स्तोत्र पढ़ कर करे शनि देव का ध्यान।
स्तोत्र के पाठ ने दशा वी दीनी टाल।
सुख से सब रहने लगे होकर माला माल।
सूर्य नन्दन का 'चमन' है ऐसा प्रभाओ।
तुम भी पढ़ो स्तोत्र को मनवांछित फल पाओ।
महादेव जी ने कहा सुन नारद मुनि राय।
शनि दशा से बचने का है यह सरल उपाय।
मात लोक के जीव ये दुःखों से बच जाय।
प्रेम सहित स्तोत्र यह पढ़े या सुने सुनाए।
कथा यह पद्म पुराण की निश्चय करके मान।
'चमन' चाहे कल्याण तो कर भगवान का ध्यान।
साढ़ सती के वास्ते दिन सताईस पाठ।

चार रोज पढ़ लेने से होवें इक सौ आठ।
प्रति शनिचरवार जो पूजे विधि अनुसार।
प्रतिमा लोहे की बना मन में निश्चय धार।
'चमन' सत्य संकल्प से चल जाये तदबीर।
बन जायेगी एक दिन बिगड़ी यह तकदीर।
मन में धीरज धार कर, सबर से समय गुजार।
'चमन' भजन भगवान से होगा बेड़ा पार।

शनि महिमा

शनि दशा से इक राजा का,
राज पाट सब नष्ट हुआ।
बिछड़ गये सब साक सम्बन्धी,
देह को भी अति कष्ट हुआ।
दुःखों से पीड़ित वो राजा,
बन में फिरता घबराया।
देवयोग से प्रातः समय,
इक साधु की कुटिया में आया।
देखा साधु सूर्य देव के,
सन्मुख सीस झुकाए हुए।
पाठ शनि स्तोत्र का करता,
मन को मस्त बनाये हुए।

राजा ने स्तोत्र शनि का सुना,
तो मन मसरूर हुआ।
साक सम्बन्धी राज पाट सब,
मिला तो दुःख दूर हुआ।
महिमा शनि स्तोत्र की,
महाराजा भी जब जान गया।
प्रेम सहित शनि देव का उसने,
सच्चे मन से ध्यान किया।
विघ्न दूर हो गये 'चमन' सब,
देह आरोग दौलत पाई।
तेज बढ़ा दुनिया में उसका,
जिस ने शनि जी की महिमा गाई।

••• बोल शनि देव महाराज की जय। •••

बुध स्तोत्र

बुध दशा 17 वर्ष

जै धर्मवान जै बुद्धि विधाता।
बुध नाम है जीवन दाता।
जिस पर तेरी कृपा है होती।
विद्या उस से दूर न होती।
लम्बी आयु तुम देते हो।
धर्म का पालन भी करते हो।
व्यापार में उन्नति दिलाने वाले।
मुकदमे झगड़े जिताने वाले।
इन झंझटों से दूर ही रखना।
मुझ पर अपनी कृपा ही करना।

जिस पर तेरी दृष्टि आवे।
धन की हानि कभी न पावे।
कार्य सिद्ध हो करने वाले।
सदा भण्डारे भरने वाले।
मन से 'चमन' तुम्हें ध्याऊं।
तेरा ही मैं स्तोत्र गाऊं।
दु:ख दरिद्रता मिटाते रहना।
रोगों से भी बचाते रहना।
गृहस्थ जीवन सुखी रहें,
रखें जो विश्वास।
'चमन' पर कृपा करो,
पूरी करो मेरी आस।

शुक्र स्तोत्र

शुक्र दशा 20 वर्ष

जै गुरू शुक्र दैत्यों के देवा।
सिद्धि पावे जो करे तेरी सेवा।
तेरा नाम जो कोई ध्यावे।
रिद्धि सिद्धि वर तुम से पावे।
तांत्रिक विद्या के तुम हो स्वामी।
संजीवन विद्या के तुम हो ज्ञानी।
मन्त्र तन्त्र में तुम सा गुण हो।
ऋद्धि सिद्धि में भी निपुण हो।
चिन्ता दुःख भय और बिमारी।
करो कृपा तो रहे सुखारी।

राज दरबार में मान बढ़ाना।
रोगों से भी मुझे छुड़ाना।
दयालु दया के भण्डारी हो तुम।
भूत प्रेतों के स्वामी हो तुम।
जो चाहो तो मृतक में जान भर दो।
दया जिस पे हो उस का कल्याण कर दो।
मेरे रोग हरो ऐ तांत्रिक देवा।
मुझे शक्ति दो करूं तेरी सेवा।
सदा मेरे परिवार की रक्षा करना।
रहूं मैं सुखी कृपा मुझ पे यह करना।
न हो कोई बिमारी झगड़ा लड़ाई।
करो कृपा मुझ पे मुसीबत है आई।

-:दोहा:-

दयावान दया करो जान मुझे अन्जान।
'चमन' की रक्षा करने आओ शुक्र महान।

ऋण कामना निवारण स्तोत्र

आदगणेश मनाय के सरस्वती मात ध्याए।
महांगौरी भगवान शिव के जैकार बुलाए।
सूर्य देव की कृपा से, चमके तेज विशाल।
दया से देव कुबेर की ग्रह हो मालामाल।
एक बार कैलाश पे, ऋषि राज ने जाए।
पूछा था भगवान से, ऋण मोचन उपाय।

दुखी हुए इक गृहस्थी ने, पूछा सीस झुकाए।
मिट जाए ऋण कामना, कहिए कोई उपाय।
बोले ऋषिराज तब, आ गया हम को याद।
कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर और नारद का संवाद।
पास न होवे लक्ष्मी, जितनी हो दरकार।
गृहस्थी डावांडोल हो, करके सोच विचार।
ऐसे समय जीव करे सूर्य का ध्यान।
गंगाजल से सात दिन करे अर्घ परवान।
बैठ रवि सन्मुख करे, स्तोत्र का जाप।
मिट जाए उस जीव के सात जन्म के पाप।
उसके किसी भी कार्य में, बाधा न कोई आए।
रविवार से आठ दिन यह स्तोत्र गाए।

शिव शंकर भगवान और नारद का सम्वाद।
लिखूं बना स्तोत्र मैं करके प्रभु को याद।
ऋण मोचन स्तोत्र यह, पढ़े जो श्रद्धा-धार।
सावल शाह सिर से कर्ज देंगे जल्द उतार।
कैसा भी ऋण क्यों न हो नियत रखे ठीक।
उधम पुरुषार्थ कर, मांगे कभी न भीख।
प्रभु भरोसे यत्न कर करता रहे उपाय।
इस स्तोत्र पाठ से हाथों में बरकत आए।
ब्रह्म देव की कृपा से, किस्मत भी पल्टाए।
मिट्टी भी हो हाथ में, तो सोना बन जाए।
चिन्ता न मन मे करे रहे सदा खुशहाल।
'चमन' भरोसे राम के बांका हो न बाल।

श्री सूत जी बैठे थे एक नदी के तीर।
सन्मुख उनके लगी ऋषियों की अति भीड़।
रवि देव करो मेरी सब बाधाएं दूर।
धन सम्पत्ति से तुम करो गृह मेरा भरपूर।
ऋण लेने का ख्याल भी मन में कभी न आए।
आप भास्कर देव जो करें मेरी सहाय।

स्तोत्र

विनय सुन लो रवि देव स्वामी।
अति शक्तिशाली, प्रभु अर्न्तयामी।
मैं निर्धन गृहस्थी हूं बेबस बेचारा।
मैं बलहीन दुखिया हूं किस्मत का मारा।
अन्धेरा मिटा रोशनी लाने वाले,
हो निर्धन की किस्मत चमकाने वाले।

सुनहरी किरन जिसको छुए तुम्हारी।
है मिट जाती उसकी विपता भी सारी।
रविदेव अपनी दया जो दिखाए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
बसर अपनी औकात में करता जाऊँ।
मैं धीरज सदा हृदय में धरता जाऊँ।
तुम्हारे भरोसे गुजारा हो मेरा।
मुझे हर वक्त ही सहारा हो तेरा।
हवस न कोई मेरे मन में समाए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
तेरी किरणें कंकर को हीरा बना दें।
जो निर्धन की तकदीर को जगमगा दें।
सदा पूजा करता है संसार तेरी।
दयामय सुनो बिनती इक बार मेरी।

मेरा काम कोई भी रुकने न पाए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
यही बिनती मेरी स्वीकार करना।
सुखी दया दृष्टि से परिवार करना।
मेरे मन के भावों को पूरा करो तुम।
मेरे सीस पर हाथ अपना धरो तुम।
जमाने की गर्दश न मुझ को सताए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
तुम्हारे सिवा दुःख मिटाए न कोई।
बिगड़ता मुकद्दर बनाए न कोई।
नहीं देवता कोई प्रतक्ष तुम सा।
किसी का नहीं तेज और नक्श तुम सा।

तभी आप से कह रहा सिर झुकाए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
मेरी तंगीयों को प्रभु दूर करना।
न फिकरों से दिल मेरा मजबूर करना।
न औरों की आशा पे दुःख मैं उठाऊं।
न झूठी उम्मीदों पे इज्जत गवाऊं।
मेरा दिल न डोले न चिन्ता सताए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।
मेरी थोड़ी हिम्मत से हो काम भारी।
मेरे धन में बरकत रहे वोह तुम्हारी।
मेरी आन रख लो मेरी शान रख लो।
मेरी लाज ए सूर्य भगवान रख लो।

मेरी हर जरूरत करो आप पूरी।
रहे कोई आशा न मेरी अधूरी।
'चमन' हाथ जोड़े अर्ज यह सुनाए।
मुझे कर्जा लेने की नौबत न आए।

-:दोहा:-

सूर्य देव की कृपा से हाथ में बरकत आए,
'चमन' सूर्य वरदान से कभी न घाटा खाए।
रविवार को व्रत करें, मन में निश्चय धार,
ब्राह्मण को भोजन खिला करे आदर-सत्कार।

मुद्रक : नव चमन प्रिंटर्ज़
महामाया चमन मन्दिर, कटड़ा सफेद, अमृतसर।

ऋण विमोचन स्तोत्र

सुनो मेरी बिनती सर्वज्ञ ज्ञाता।
नहीं कष्ट अब यह सहा मुझ से जाता।
नहीं साथ देती यह तकदीर मेरी।
कोई काम न आए तदबीर मेरी।
भटकता हूं दर दर पे निरआस होकर।
मैं दुःख पा रहा हूं तेरा दास होकर।
मैं चिन्ता में निसदिन जला जा रहा हूं।
मैं अपने विचारों से दुखा पा रहा हूं।
अनाथों के नाथ हो, तुम शक्तिशाली।
नमानों के मान हो तुम शक्तिशाली।
बने मेरी इज्जत तुम्हारे बनाए।
रखो अपने दामन में मुझको छुपाए।

दयालु दया करके बिगड़ी बना दो।
कृपा कर प्रभु मेरे ऋण को चुका दो।
मेरी झूठी आशा ने भरमाया मुझको।
यह कर्ज के चक्कर में फंसाया मुझको।
जो उम्मीद थी मेरी वो वर न आई।
है धोखे में मैंने यह इज्जत गंवाई।
मेरी शान जाती है इसको बचा लो।
कृपा कर प्रभु मेरे ऋण को चुका दो।
भरोसा था जिन पर सभी छोड़ भागे।
इसी ऋण के भय से सभी साक त्यागे।
था मज़बूर होकर ही कर्जा उठाया।
थी कमजोरी मेरी सब्र न जो आया।
तबाही से ऐ नाथ मुझको बचा लो।
कृपा कर प्रभु मेरे ऋण को चुका दो।

मैं लाता हूं जितनी भी करके कमाई।
नहीं ऋण चुकाने को बचती है पाई।
गुजारा करूँ कैसे मुझको बता दो।
कृपा करके मेरे ऋण को चुका दो।

-:दोहा:-

ऋण मोचन स्तोत्र यह पढ़े जो कर विश्वास।
सर्वेश्वर भगवान सब पूर्ण कर दे आस।
ऋण हो किसी प्रकार का उतर सिर से जाए।
'चमन' जो इस स्तोत्र को पढ़ेगा मन चित लाए।

प्रकाशक :
बृज मोहन भारद्वाज पुस्तकाल्य
महामाया चमन मन्दिर, कटड़ा सफेद, अमृतसर।

₹ 30-00

प्रकाशक :
बृज मोहन भारद्वाज पुस्तकालय (2)
महांमाया चमन मन्दिर, चिट्टा कटड़ा, अमृतसर।
Mob.:98145 66644

e-mail : chamankishridurgastuti@rediffmail.com